पल्लव

साहित्यिक मासिक — सहयोग शुल्क १/- टका

वर्ष : द्, अंक : अट्ठारह-उन्नैस, २०५१ अगहन-पूस

मैथिली विकास-मञ्च, काठमाण्डूक लेल धीरेन्द्र प्रेमर्षिद्वारा सम्पादित तथा प्रकाशित

विशेष सहयोगी : नीरज कर्ण, सहयोगी : रूपा धीरू आ सुनील पुरी

प्रतिनिधि : उमेश भगत (विराटनगर), श्यामसुन्दर कापड़ि 'शशि' (जनकपुरधाम)

टाइप सेटिंग : म्याली कम्प्यूटर सर्भिस, बागबजार, पुतली सडक चोक, काठमाडौं

अइ अंकक आर्थिक सहयोगी : केशवानन्द मिश्र, मिश्रानन्द भवन, तिलाठी, राजविराज

हमर पतिक लेल

उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'

ई नै पुछू– कोना भेटल हमरा ई व्याकरण ।
के देलक हमरा कविता– संहिता ।
ई नै कहू– की करवें ईसब अन्टसन्ट पोथासँ
दही भरका भौंकाह आगिमे, सहस्रमूर्खक चिता ।
ई नै सोचू– अक्षर-ज्ञान नै अछि
तेँ सोभ्ह क क पोथी धरी नै अबै छै
नै जनै छी आद्यन्त 'गीता' ।
पूछव त पता चलत– रूचिर हरणक संवेद छै अखनो मनमे
फलै-फुलै छै अखनो आर्द्र शरीर
अखनो अछि मनमे स'ख बाँकी,अखनो जादू-छड़ी छी घुमा सकैत
तखन अइमे कोन अचरजक बात जे नै अहाँ
त आनो क्यो हमरा ल क लिखत नवकविता ।
लिखल जाएत व्याकरण– हमर चलित-चित नयनपर ।
की कहब एकरा– आत्मम्भरिता ?